Seventeenth Loksabha

an>

Title: Issue regarding increasing incidents of fires in forests.

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : अध्यक्ष महोदय, आपका धन्यवाद । मैं इस हाउस का ध्यान बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, जो कि फॉरेस्ट फायर है । आज सरकार मैसिव ट्री प्लान्टेशन स्कीम पूरे देश में लागू कर रही है । मुझे लगता है कि यह आपके दिल के भी बहुत करीब है । मैंने पढ़ा है कि आपने भी अपने संसदीय क्षेत्र में एक लाख पौधे लगाने का काम किया है । नेशनल फॉरेस्ट पालिसी के उदिष्ट हमारे देश का 33 प्रतिशत भौगोलिक एरिया फॉरेस्ट से कवर होना चाहिए । महाराष्ट्र ने भी इस ओर पहल की है, जिसके तहत 4 करोड़, 13 करोड़ और 33 करोड़ पौधे गत तीन वर्षों में लगाने की मुहिम छेड़ दी गई है । मुझे लगता है कि यह बहुत ही सराहनीय कदम है । आज ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है, अगर उसको कंट्रोल करना है, तो हर एक इंसान को पौधे लगाना बहुत जरूरी है । फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया का जो डेटा है, आज जो फॉरेस्ट फायर की घटनाएं हैं, वह 49 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ गई हैं । यह फॉरेस्ट फायर सिर्फ नेशनल फॉरेस्ट तक ही सीमित नहीं है । मुंबई में जो अर्बन फॉरेस्ट है, उसके सराउन्डिंग सब अर्बन रीज़न तक भी बढ़ गया है । 6,500 हेक्टेयर फॉरेस्ट अब तक जलकर खाक हो चुका है । उससे बहुत बड़ा नुकसान भी हो रहा है । यह पता चला है कि जो 90 फीसदी फॉरेस्ट फायर है, वह direct or indirect result of human interface. मैंने भी एक मुहिम छेड़ी और वर्ष 2017-18 में लाखों पौधे लगाने की योजना बनाई । हमने वहां पर हजारों लोगों की मदद से मैन मेड फारेस्ट बनाने की इच्छा जाहिर की और पौधे लगाए । लेकिन आपको बताते हुए मुझे बहुत खेद हो रहा है कि दो साल में, दोनों बार जंगल में आग लगाई गई और किसी के ऊपर भी कार्रवाई नहीं हुई ।

अतः मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि वह एक यूनियन लेजिस्लेशन लेकर लाएं और जो भी दोषी हों, उन पर कड़ी कार्रवाई की जाए । जो भी फॉरेस्ट आफिसर उसके ऊपर ध्यान नहीं देते हैं, उनकी नेग्लिजेन्स

भी फिक्स हो और उनके ऊपर भी कार्रवाई की जाए । हम जो पौधे हर साल लगाते हैं, उसका थर्ड पार्टी आडिट होना चाहिए, ताकि हर साल हम जितने पौधे लगाते हैं, उनमें से अगले साल तक कितने पौधे जिंदा बचे, उसकी गणना की जा सके । उसके तहत यह जो ट्री प्लान्टेशन प्रोग्राम है, वह आगे जारी रहे ।

माननीय अध्यक्ष:

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल और

श्री गजानन कीर्तिकर को डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।